पाठ 18. तोत्तोचान

पाठ का परिचय

तोत्तोचान अपने नए स्कूल के गेट को देखकर रुक गई। उसके स्कूल का गेट पेड़ के दो तनों का बना था। उनपर टहनियाँ और पत्ते भी थे। उस स्कूल में कमरों की जगह रेलगाड़ी के छह बेकार डिब्बे लगाए गए थे। रेलगाड़ी में स्कूल देख तोत्तोचान को बहुत खुशी हुई। तोत्तोचान उन डिब्बों में जाना चाहती थी लेकिन माँ ने जाने नहीं दिया। वे कक्षाएँ थीं और अभी तोत्तोचान का दाखिला नहीं हुआ था। तभी तोत्तोचान की मुलाकात हेडमास्टर से हुई। हेडमास्टर ने तोत्तोचान की माँ को घर भेज दिया क्योंकि वे तोत्तोचान से बात करना चाहते थे। तोत्तोचान थोड़ा घबरा रही थी लेकिन हेडमास्टर की बातों से उसका सारा डर जाता रहा। उसे यह स्कूल और यहाँ के हेडमास्टर बहुत अच्छे लगे। जब हेडमास्टर ने उससे कहा कि अब वह इस स्कूल की छात्रा है तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। घर आकर वह दूसरे दिन का इंतज़ार करने लगी। दूसरे दिन माँ ने जब उसे स्कूल जाते देखा तो खुशी से उनकी आँखें भर आईं। उन्हें ध्यान आया कि हाल ही में वह एक स्कूल से निकाली जा चुकी है।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हर एक व्यक्ति के साथ अपनेपन से पेश आना चाहिए। सहृदय व्यक्ति किसी का भी दिल जीत सकता है। इस दुनिया में सभी समान हैं। कोई छोटा या बड़ा नहीं है।

पाठ का वाचन

एक-एक अनुच्छेद का वाचन करते हुए प्रश्नोत्तर विधि से पाठ को स्पष्ट करें। बीच-बीच में पठित अंश पर आधारित सरल प्रश्न पूछें। अंत में एक बार पूरा पाठ मौन वाचन के रूप में पढ़ने को कहें।

महत्वपूर्ण चर्चा

बच्चों से पूछें –

- तुम्हें तोत्तोचान की यह कहानी कैसी लगी?
- तुम्हें अपना स्कूल कैसा लगता है?
- क्या तुम भी चाहते हो कि तुम्हारे स्कूल की कक्षाएँ रेलगाड़ी के डिब्बों में हों?
- तुम कैसे हेडमास्टर को अपने स्कूल में पसंद करोगे?
- क्या तुम बता सकते हो कि तोत्तोचान को पहले वाले स्कूल से क्यों निकाला गया होगा?